प्रयोगशाला विधि (Experimental Method)

इस विधि का आधार नये ज्ञान की खोज कर शिक्षार्थी द्वारा उसको सीखना है। विद्यार्थी अपने शिक्षक द्वारा दिये गये निर्देशों के अनुरुप स्वयं प्रयोग करता है और अनुभव करता है और अन्तिम रुप से निकाले गये निष्कर्षों पर ज्ञान को समेकित करता है। इसे शिक्षाशास्त्री, वैज्ञानिक विधि अथवा प्रयोगशाला विधि के नाम से भी जानते हैं।

प्रयोगशाला विधि विज्ञान शिक्षण के लिए उपयोगी है। यह विधि 'करके सीखने' तथा 'अवलोकन द्वारा सीखने' आदि शिक्षण सूत्रों पर आधारित है। प्रयोगशाला विधि के अन्तर्गत विद्यार्थी अध्यापक के पर्यवेक्षण में व्यक्तिगत रुप से छोटे-छोटे समूहों में स्वयं प्रयोग करते हैं प्रयोगशाला विधि में न तो व्याख्यान विधि की तरह अध्यापक व्याख्यान द्वारा विद्यार्थियों को तथ्य का ज्ञान करवाता है और नही प्रदर्शन विधि की तरह तथ्यों से अपरिचित होने के लिए प्रयोग का प्रदर्शन करता है बल्कि विद्यार्थियों को व्यक्तिगत प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा स्वयं तथ्य से परिचित होने का अवसर देता है। प्रयोगशाला विधि के अन्तर्गत छात्रों को ऐसी स्थिति या प्रयोगशाला में रखा जाता है जहां वह सूचनाओं को एकत्र करने के बाद प्रयोग व अवलोकन के आधार पर पूर्व निर्धारित नियमों का सत्यापन करते हैं। यह विधि विज्ञान शिक्षण की अत्यधिक महत्वपूर्ण विधि है।

प्रयोगशाला विधि अन्य विधियों की तुलना में अधिक उपयोगी, व्यावहारिक, वैज्ञानिक विधि है। प्रयोगशाला विधि में प्रयोग को सफल व प्रभावशाली बनाना शिक्षक की स्वयं की योग्यता, क्षमता अनुभव तथा सूझ-बूझ पर निर्भर करता है।

प्रयोगशाला विधि के उद्देश्य

प्रयोगशाला विधि के निम्न उद्देश्य हैं—

(1.) समस्या समाधान में प्रशिक्षण देना।
(2.) शुद्ध प्रेक्षण तथा ध्यान से रिकार्ड करना।
(3.) कौशलों का विकास करना
(4.) पहले पढ़ाये जा चुके तथ्य तथा सिद्धान्तों का सत्यापन करना।
(5.) प्रयोगों, वैज्ञानिक विधियों तथा अन्वेषणात्मक परियोजनाओं में प्रशिक्षण देना।
(6.) विज्ञान में रुचि उत्पन्न करना तथा उसे कायम रखना।

Scanned with CamScanner